

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 04 भाग 02, (जुलाई, 2024)
पृष्ठ संख्या 23-25



लीची: फलों की रानी से जुड़ा एक संवाद

शिव कुमार शिवंद¹, ईशानी शर्मा¹, अंकिता धीमान²
एवं ऋतिक चावला¹

²के.वी.के ताबो लाहुल स्पीती, डॉ यशवंत सिंह परमार
औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय,
नौनी सोलन (हि. प्र)- 173 230, उत्तर प्रदेश, भारत।

Email Id: – marginshiv05@gmail.com

सारांश

फलों की रानी के नाम से प्रसिद्ध लीची। इसका वानस्पतिक नाम *लीची चिनेनेसिस* है तथा यह एक सदाबहार प्रकार का पौधा है इसका उद्गम चाइना में हुआ है। और इसकी सबसे अधिक खेती चाइना में ही की जाती है। वर्तमान समय में इस फल को उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में लगाया जाता है। वर्तमान समय में इस फल पर मुख्य अनुसंधान: राष्ट्रीय अनुसंधान केंद्र लीची मुज्जफरपुर बिहार में किया जाता है। इस लेख में, हम लीची की खेती के लाभ और चुनौतियों का विश्लेषण करेंगे। लीची की प्रमुख विशेषताएँ, उसकी वाणिज्यिक महत्ता, और खेती में उपयुक्त तकनीकों का वर्णन किया जाएगा। हम इस अनुसंधान के माध्यम से लीची की खेती के समृद्ध होने की संभावनाओं का अध्ययन करेंगे और उसके संभावित प्रभावों पर विचार करेंगे। इससे न केवल खेती कर्ताओं को लाभ होगा, बल्कि साथ ही लोकल अर्थव्यवस्था और समुदायों को भी इसका उत्तरदायित्व सही ढंग से संभालने का अवसर मिलेगा।

परिचय

आकर्षक लाल से गुलाबी रंग के मनमोहक खुशबूदार और लाजवाब स्वाद के कारण लीची न सिर्फ भारत बल्कि दुनिया में एक अपना अवल स्थान बनाये हुए है। भारत लीची उत्पादन में चाइना के बाद दुसरे स्थान पर है। गत कुछ वर्षों में इसके निर्यात की कई सम्भाव्य विकसित हुई है पर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बड़े आकार तथा उच्च गुणवत्ता वाले फलों

की अधिक मांग है। इस की खेती के लिए जल वायु के सटीक पैमाने है जो कुछ ही स्थानों पर पाए जाते है इस कारण वश लीची की खेती मुख्य रूप से उत्तरी बिहार, देहरादून घटी, उत्तर प्रदेश के तराई मैदानों तथा झारखण्ड तक ही सीमित है। इसके अतिरिक्त पश्चिम बंगाल पंजाब हरियाणा एव हिमाचल प्रदेश में भी सफलापूर्वक इस की खेती की जा रही है। इसके फल 10 मई से ले कर जुलाई के अंत तक देश के भिन्न भागों में पक कर तैयार होते है। त्रिपुरा की लीची सब से पहले पकती है। उस के बाद क्रमशः रांची पश्चिम बंगाल मुजाफ्फूर बिहार उत्तर प्रदेश पंजाब उत्तरांचल ओर अंत में हिमाचल में यह फल जुलाई महा के पहले हफ्ते में पकते है जिससे किसनो को इस फल की अच्छे दाम मिलते है। बिहार की लीची अपनी गुणवत्ता के लिए देश विदेश में प्रसिद्ध है। इस फल में 11% शर्करा, 0.7% प्रोटीन, 0.3% वसा एवं अन्य विटामीन परचुर मात्र में पाए जाते है।

मृदा एव जलवायु

लीची की खेती के लिए जल वायु एव मृदा के सटीक पैमाने होना आवश्यक है। लीची की खेती के लिए मृदा का पी. एच. मान 6 से 7 के साथ गहरी बलुई दोमट मिट्टी उपयुक्त होती है। जिस मृदा में कैल्शियम की अधिक मात्रा और मिट्टी की जल धारण क्षमता अधिक होनी चाहिए साथ ही यह ध्यान रखे की जहाँ पर पेड़ हो उस के आस पास पानी जमा ना हो। उच्च भूमिगत जलस्तर के साथ उममस युक्त मिट्टी

को इस की खेती की लिये उत्तम माना जाता है। लीची की खेती को हलकी अम्लिए एव लेटराइट मिटटी में भी सफलता पूर्वक की जा सकती है। समशीतोष्ण जलवायु लीची के उत्पाद के लिए बहुत ही उपयोगी मानी जाती है। हालही में हुए कुछ अनुसन्धानों में यह पाया गया है की सफलतापूर्वक लीची उत्पादन के लिए नवम्बर और दिसम्बर महा में शुष्क एव ठन्डे तापमान से लीची के फलो में वृद्धि होती

है व: जनवरी और फरबरी माह में असमान साफ अथवा तापमान में वृद्धि एव शुष्क मौसम भी लीची में अधिक फूल आते है। साथ ही अप्रैल मई में कम गर्मी से फल का विकास अछे से होता है। अत्यधिक गर्मी के कारण लीची के फलो में चटकन की समस्या बढ़ जाती वह इस समय वर्षा होने से फलो की गुणवत्ता कम होती है वह रंग भी नही निखरता।

किस्में

लीची की किस्म को उस के पकने के समय के अनुसार विभाजित किया जाता जाता है।

वर्ग	अगेती	माध्यम	पछेती
पकने का समय	मई	मई जून	जून जुलाई
किस्म का नाम	शाही, त्रिलोकिया औजली, देशी अर्ली, बेदना, स्वर्नरुपा	रोज सेंटेड, देहरादुन,	चाइना, पुरबी कसबा

प्रवर्धन

लीची के पेड़ों की एयर लेयरिंग अथवा गूटी द्वारा तयार किया जाता है। वैसे तो लीची को बीज से भी लगाया जाता है पर क्रॉस पोलिनेतेद होने के कारण इस पर लगने वाले फलो की गुणवत्ता का अनुमान लगाना कठिन होता है। इसी लिए इसे गूटी के मध्यम से तयार किया जाता है। गूटी के माध्यम से बनने पौधों में फल जल्दी आते है और इन की गुणवत्ता पर कोई प्रभाव नही होता।

गूटी करने की विधि : फल तुड़ाई के उपरांत मई या जून के महीने में सीधी एव स्वस्थ डाली चुन कर किसी एक गांठ के पास 2 सेंटीमीटर चौड़ा चालला बनाये उस पर IBA 2000 पीपीएम का घोल लगये और मोस घास की मदद से उसे 400 गौज के सफेद पालिथीन के तुककड़े से बांधे. 2 महीने के उपरंत उस डाली में जड़ निकल जायेगे। इस समय उस डाली को पेड़ से काट कर पालीबैग में लगा दे।

पाधा लगाना

पूर्णता विकसित होने पर लीची वृक्ष आकार में बड़ा होता है । इस की लम्बाई औसतन 5 मी. तक व: फैलवा 6.2 मी. तक हो सकता है अतः इसे औसतन 10 x 10 मी. की दूरी पर लगाना चाहिए या एच डी पी पर 6 x 6 मी. की दूरी पर लगाना चाहिए। लीची के पौध की रोपाई से पहले खेत में रेखांकन करके पौधा लगाने का

स्थान सुनिश्चित कर लेते है। अप्रैल-मई माह में, 90 x 90 x 90 सें.मी. आकार के गड्डे खोदे जाते हैं, जिनमें ऊपर की आधी मिट्टी एक तरफ रखी जाती है और नीचे की आधी मिट्टी दूसरे तरफ। जून के महीने में, वर्षा के बाद, गड्डों में 2-3 टोकरी गोबर की सड़ी हुई खाद, 2 कि. ग्रा. करंज अथवा नीम की खली, 1.0 कि.ग्रा. हड्डी का चूरा या सिंगल सुपर फास्फेट, और 50 ग्रा. क्लोरपाइरीफॉस, 10% धूल/20 ग्रा. फ्यूराडान-3 जी/20 ग्रा. थीमेट-10 जी मिश्रित करके गड्डों को भरा जाता है। गड्डों को खेत की सामान्य सतह से 10-15 सें.मी. ऊँचाई पर भरा जाता है। वर्षा के मौसम में, जब गड्डों की मिट्टी दब जाती है, तो पौधे की पिंडी की जगह खुरपी की सहायता से बनाई जाती है और पौधे लगाए जाते हैं। पौधे लगाने के बाद, उनके चारों ओर एक थाला बनाकर 2-3 बाल्टी पानी डाल दिया जाता है। वर्षा न होने पर भी पौधों को पानी देना जारी रखा जाता है, जब तक कि पौधे पूरी तरह से स्थिर न हो जाएं।

पाधा नियंत्रण

लीची की तुड़ाई के तुरंत बाद किसनो को पौधे में कांत छोट करनी चाहिए। जिस डाल पर फल लगा था उससे काट कर छोटा कर दे। उस के बाद पौधे के सेंटर को खोल दे जिस से सूर्य की किरने पौधे के मध्य भाग तक जाये। इस से कीट एवं बीमारियों का भी नाश होता है।

खाद एवं उर्वरक	
खाद	मात्रा (प्रति पौधा प्रतिवर्ष)
सड़ी हुई गोबर की खाद	30 कि. ग्रा.
करंज की खली	2 कि. ग्रा.
यूरिया	250 ग्रा.
सिंगल सुपर फास्फेट	150 ग्रा.
म्यूरेंट ऑफ पोटाश	100 ग्रा.
करंज की खली	250 ग्रा.
कम्पोस्ट	150 ग्रा.
सिंगल सुपर फास्फेट	200 ग्रा.
म्यूरेंट ऑफ पोटाश	0.6 कि. ग्रा.
खाद (प्रति वर्षी कृत)	5 कि. ग्रा. सड़ी हुई गोबर, 250 ग्रा. करंज की खली, 150 ग्रा. यूरिया, 200 ग्रा. सिंगल सुपर फास्फेट, 0.6 कि.ग्रा. म्यूरेंट ऑफ पोटाश

छिडकाव किया जा सकता है इससे भी फलो का झड़ना बंद हो जाता है साथ ही फलो की मिठास एवं रंग भी अच्छा आता है और फल भी कम फटते हैं।

परिपक्वता एवं तुड़ाई

लीची एक गैर-जलवायु फल है और जब पेड़ पर फल पूरी तरह से पक जाते हैं तभी तुड़ाई की जाती है। तुड़ाई के समय फल पर रंग का विकास, फल के ऊपर बनी गाठों का सपाट होना, छिलका का गुद्दे से आसानी से छोड़ देना और टीएसएस एवं अम्लता का अनुपात, फलों के सेट से परिपक्वता तक लिए गए दिनों की संख्या इत्यादि कारकों को भी ध्यान में रखा जाता है। हालांकि, कटाई के चरण को तय करने के लिए रंग विकास प्रमुख मानदंड है लेकिन अंतिम मानदंड नहीं है।

फल को तोड़कर खाने के बाद ही अंतिम निष्कर्ष पर पहुंचना चाहिए। फल को हमेशा गुच्छों में शाखा के हिस्से और कुछ पत्तियों के साथ ही तोड़ा जाता है। तुड़ाई के समय चयनित गुच्छों की कटाई वांछनीय परिपक्वता अवस्था में पहुंचने पर करते हैं।

लीची के बगीचे में अच्छे पैदावार एवं उत्तम गुणवत्ता के फलो के लिए कुछ महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखें:-

1. पेनिकल आने के 3 माह पूर्व पौधों में सिंचाई रोक दें। लीची में माइक्रोनुतीयट की खासी कमी होती है। इस से बचाव के लिए पेनिकल आने से 2 सप्ताह पूर्वक 2 ग्राम जिंक को प्रति लीटर पानी में घोल कर छिडकाव करें और दूसरा छिडकाव 15 दिन बाद करें इस से लीची पर उत्तम फूल आते हैं।
2. पौधे पर जब फूल निकले उस समय किसी भी प्रकार के कीटनाशक के छिडकाव ना करें और बगीचे में मधुमक्कियों को रखते हैं।
3. लीची में फ्रूट ड्राप से बचने के लिए फ्रूट सेट के उपरांत 20 मिली NAA को एक लीटर पानी में घोल कर पेड़ों पर छिडकाव करें।
4. फल लगने के उपरांत इसके अलावाफ्रूट सेट के 15 दिन उपरांत बोरोन का

फलों को सुबह जल्दी तोड़ लेना चाहिए जब तापमान और आर्द्रता अनुकूल हो जो फल की लंबी शेल्फ लाइफ देता है, अन्यथा फल के छिलकों का रंग तेज धूप एवं गर्मी की वजह से बहुत जल्दी खराब होने लगता है। फलों की तुड़ाई के समय फलों को हमेशा बैग में ही इकट्ठा करना चाहिए और जमीन पर उसे नहीं गिराने देना चाहिए। लीची के फलों की तुड़ाई के बाद फल को पहले ठंडा किया जाना चाहिए, जिससे तुड़ाई के समय की गर्मी निकल जाय उसके बाद उसकी पैकिंग करने से फल की शेल्फ लाइफ बढ़ती है। इसके अलावा फलों को दो-तीन घंटे के भीतर कोल्ड स्टोरेज में लाना चाहिए।

फलों की उपज पेड़ की उम्र, कृषि-जलवायु की स्थिति और बाग के रखरखाव के अनुसार बदलती रहती है। आमतौर पर 14-16 साल पुराने पेड़ों से लगभग 80-120 किलो फल प्रति पेड़ प्राप्त होता है। हालांकि पूर्ण विकसित पेड़ से 160-200 किग्रा प्रति पेड़ की उपज प्राप्त की जा सकती है।